17 फरवरी 2007, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सम्यग्दर्शन के विषयभूत भगवान आत्मा की बात भी जिन्होंने नहीं सुनी है, उनके लिये ही समयसार लिखा गया है।

आ.कुन्दकुन्द और पंचपरमागम,पृष्ठ :53

वर्ष : 29, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (द्वितीय), 07 प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

बीना नगरी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

बीना (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 25 जनवरी से 31 जनवरी 2007 तक श्री नेमिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक मांगलिक कार्यक्रमों पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ।

इस महोत्सव में **मुनि श्री 108 निर्वाण सागरजी** पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। विद्वानों में देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पर प्रासंगिक प्रवचनों के अतिरिक्त दादा विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित हेमचन्दजी 'हेम', पण्डित सुबोधजी सिवनी आदि के विभिन्न विषयों पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। बालकक्षा पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने ली।

पंचकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के निर्देशन में सह-प्रतिष्ठाचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित मधुकरजी जलगाँव, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ़, पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, पण्डित प्रियंकजी शास्त्री रहली, पण्डित चेतनजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित महेन्द्रजी, पण्डित कांतिकुमारजी इन्दौर, पण्डित बाबूलालजी बांझल गुना ने सम्पन्न कराई।

महोत्सव की शुरुआत 25 जनवरी को घटयात्रा जुलूस के बाद झण्डारोहण एवं पाण्डाल उद्घाटन से हुई। इस अवसर पर श्री नेमिनाथ पंचकल्याणक विधान का आयोजन हुआ। रात्रि में नन्दीश्वर विद्यापीठ खनियांधाना के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

26 जनवरी को इन्द्र प्रतिष्ठा का जुलूस एवं याग मण्डल विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में गर्भ कल्याणक की पूर्व क्रियायें सम्पन्न हुई।

27 जनवरी को गर्भ कल्याणक के प्रसंग पर रात्रि में श्री वीतराग-विज्ञान पाठशाला बीना के बालकों द्वारा 'विराधना का फल' नाटक का मंचन किया गया। जिसको देखकर सभी की आँखे नम हो गईं तथा सभी ने इसके माध्यम से प्रेरणायें ली।

28 जनवरी को जन्म कल्याणक का विशाल जुलूस पाण्डाल से शुरू होकर नगर के विभिन्न मार्गों से होता हुआ पांडुक शिला पहुँचा, जिसमें 7-8 हजार लोगों की उपस्थिति में श्री नेमिकुमार का जन्माभिषेक किया गया। तत्पश्चात् सौधर्मइन्द्र द्वारा ताण्डव नृत्य किया गया।

रात्रि में नेमिकुमार को पालन-झूलन का कार्यक्रम हुआ, जिसमें लगभग 10 हजार लोगों ने पालना झुलाया।

29 जनवरी को नेमिकुमार की विशाल बरात निकली, उसके बाद उन्हें वैराग्य हुआ। तत्पश्चात्

(शेष पृष्ठ-4 पर ....)

पंचकल्याणक वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

मंगलायतन-अलीगढ़ (उ.प्र.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में निर्मित तीर्थधाम मङ्गलायतन की स्थापना का चतुर्थ वार्षिक महामहोत्सव दिनांक 02 से 06 फरवरी 2007 तक अत्यन्त आनन्दोल्लासपूर्ण वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का मंगल प्रारंभ 02 फरवरी को प्रात: मंगल कलश शोभायात्रा से हुआ। देश-विदेश से पधारे सैकड़ों साधर्मियों की उपस्थिति में श्रीमती चिन्तामणी धर्मपत्नी स्व. सवाईलाल सिंघई परिवार, कन्नौज द्वारा झण्डारोहण किया गया। शिविर का मंगल उद्घाटन नैरोबी मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष प्रफुल्ल डी. राजा परिवार, नैरोबी द्वारा सम्पन्न हुआ।

शिविर में विद्वानों द्वारा प्रवचनसार परमागम को आधार बनाकर ही स्वाध्याय, तत्त्वचर्चा आदि की गई। इस अवसर पर प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव के प्रवचनसार चरणानुयोग सूचक चूलिका पर सी.डी. प्रवचनों का लाभ समागत मेहमानों को प्राप्त हुआ।

देश-विदेश के ख्यातिप्राप्त लोकप्रिय विद्वान **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**, जयपुर द्वारा प्रवचन गाथा 79-80 पर विशेष मार्मिक प्रवचन के साथ-साथ भगवान आत्मा और आत्मानुभव के लिये कैसा पुरुषार्थ चाहिये - विषय पर हुये प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। पण्डित अभयकुमार शास्त्री देवलाली द्वारा प्रवचनसार के कलशों को आधार

(शेष पृष्ठ-5 पर ....)

सम्पादकीय –

ये तो सोचा ही नहीं

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ...)

आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी कहते हैं ह्न ''अनादि–निधन सभी वस्तुयें भिन्न–भिन्न अपनी–अपनी मर्यादा में परिणमित होती हैं। कोई किसी के आधीन नहीं है, कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होती। परमाणु–परमाणु का परिणमन स्वतंत्र है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता–धर्ता–हर्ता नहीं है।

ज्ञानेश के सम्पर्क में आने के पहले जब धनश्री को तत्त्वज्ञान नहीं था; तब वह भी निरन्तर यह सोच–सोचकर दु:खी रहती थी कि ह्न ''माँ की, मेरी, रूपश्री की और मेरे भाई जीवन्धर की जो दुर्दशा हुई, इसका एक मात्र कारण मेरे पिता हैं। उनके दुर्व्यसनों के कारण हम कहीं के नहीं रहे।''

जब से धनश्री धर्मपुरुष ज्ञानेश के सम्पर्क में आई, ज्ञानेश से तत्त्वोपदेश सुना–समझा और धर्म के मूलभूत सिद्धान्तों की श्रद्धावान बनी, तब से जब कभी उसे बचपन की याद आती है तो वह सोचती है कि ह्न ''मैं भूल में थी, तब कुछ समझती नहीं थी। इस कारण सारा दोष पिताजी के माथे मढ़ा करती थी। **''वस्तुत: जगत में जितने जीव हैं, वे सब अपने किये पुण्य–पाप का ही फल भोगते हैं, दु:खी–सुखी करनेवाला यदि अन्य कोई हो तो हमारे द्वारा किये गये पाप–पुण्य का क्या होगा ? अत: किसी अन्य को अपने दुखों का कारण मानना, दूसरों के दोष देखना मूर्खता है। कोई भी पर पदार्थ भला–बुरा नहीं है, इष्ट–अनिष्ट नहीं है। अपने राग–द्वेष एवं अज्ञान से ही वे हमें भले–बुरे प्रतीत होते हैं।**''

धनश्री को जब भी पूर्व दु:खद स्मृतियाँ सतातीं तो वह तुरंत ही पुराण पुरुष राम, हनुमान, सीता, द्रोपदी, अंजना जैसे पुण्यात्माओं के आदर्श जीवन और उन पर आयी अप्रत्याशित विपत्तियों को याद करके मन ही मन समाधान पा लेती। यदि पुराण पढ़कर उनके पात्रों से प्रेरणा न ले सके, कुछ सबक न सीख सके तो पुराण पढ़ने का प्रयोजन ही क्या रहा ?

वैसे तो शास्त्र और पुराणों के माध्यम से एवं देव–गुरु के धर्मोपदेश पर अमल करने से धनश्री एवं धनेश को अब सहज ही चलते–फिरते, उठते–बैठते, खाते–पीते धर्मध्यान होने लगा। फिर भी वह दोनों सांध्यकालों में दो–दो घड़ी शान्ति से एकान्त में बैठकर मन, वचन, काय की शुद्धिपूर्वक परमात्मा वाचक मंत्रों का एवं आत्मा–परमात्मा के स्वरूप का स्मरण करके चित्त को एकाग्र करने का पुरुषार्थ भी करती, ताकि उपयोग में आत्मस्थ होने की पात्रता प्रगट हो सके।

धनश्री ने धनेश को संबोधित करते हुए कहा ह्न ''जिसतरह हमें अज्ञान अवस्था में अपने आर्त–रौद्रध्यान रूप पापभावों की पहचान नहीं थी; इसीतरह बहुत से लोगों को अपने विशुद्ध भावों का भी पता नहीं होता। इसकारण वे घबराते हैं, सोचते हैं कि ह्न हाय ! हम क्या करें ? धर्मध्यान तो हमसे होता ही नहीं है, हम तो कभी धर्मध्यान करते ही नहीं हैं। हम कभी दस मिनट बैठकर मन को एकाग्र कर नहीं पाते। अत: हमें धर्मध्यान की प्राप्ति कैसी होगी ?''

पर, उन्हें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, चिन्ता करने से कुछ होता भी नहीं है। महापुरुषों की संगत से धर्म का यथार्थ ज्ञान होने पर तथा कर्म के सिद्धान्त का परिचय होने पर धर्मध्यान स्वयमेव होने लगता है।

धार्मिक सिद्धान्तों के सहारे अपने में समता भाव जगाना ही तो धर्मध्यान है; वह एकान्त में बैठकर भी हो सकता है और चलते–फिरते भी होता रहता है। अत: निश्चिन्त होकर देह और आत्मा को, निज और पर को पृथक्–पृथक् जानने का अभ्यास करें। शास्त्राभ्यास से पर में एकत्व–ममत्व एवं कर्तृत्व–भोक्तृत्व की धारणा को निर्मूल करें।

धर्मध्यान करने में सबसे बड़ी बाधा नशे की आदत है, जिसे हम बिल्ली पर हुए प्रयोग से समझ सकते हैं। एक बिल्ली को 24 घण्टे एक जाली के अन्दर भूखा रखा, उसके बाद एक चूहा छोड़ा गया, बिल्ली ने प्रथम प्रयास में ही उसका शिकार करके भूख मिटा ली। दूसरे दिन फिर 22 घण्टे बाद पहले उसे एक कप दूध में थोड़ी–सी भंग पिलाई, और थोड़ी देर में फिर चूहा छोड़ा तो अनेक प्रयत्न करने पर भी वह चूहा को नहीं पकड़ सकी; क्योंकि भंग के नशे ने उसके चित्त को भ्रमित और शरीर को शिथिल कर दिया था। इसीप्रकार जो नशा करता है, वह अपने लक्ष्य में कभी सफल नहीं होता और धर्मज्ञान एवं आत्मज्ञान के बिना कोई भी आसन और प्राणायाम आदि क्रियायें हमें धर्मध्यान की मंजिल पर नहीं पहुँचा पायेंगी।''

पुण्य के उदय से और ज्ञानेश के सान्निध्य से धनेश और धनश्री के जीवन में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ, वह सभी को अनुकरणीय है।

सच्चा मित्र वह जो दुःख में साथ दे

नशे और सिगरेट से धनेश का लीवर और फेफड़े खराब हो गये थे। ये दो ऐसे प्राण–लेवा मर्ज हैं जो मरीज को कहीं का नहीं छोड़ते। इनसे मरीज को वेदना तो मरणतुल्य होती है, पर वह जल्दी मरता भी नहीं है। खाँसते–खाँसते हाल बेहाल हो जाता है। ऐसी दयनीय दुर्दशा हो जाती है कि देखनेवालों को भी रोना आ जाये।

धनेश को दमा के दौरे दिन में एक–दो बार नहीं, अनेक बार आने लगे। दौरों से दम घुटने लगता, दम घुटने से वह पसीना–पसीना हो जाता। बेचैनी बढ़ने से वह अधीर हो उठता, दुःखद स्थिति में धैर्य धारण करने का वह संकल्प डगमगाने लगता, जो उसने ज्ञानेशजी के उपदेश से अभी–अभी किया था। उसे ऐसा लगता कि मानो ज्ञानेश द्वारा दिया गया पुण्य–पाप के फल में धीरज रखने का उपदेश उसके धैर्य की परीक्षा ले रहा हो।

यद्यपि धनश्री को मानवीय कमजोरी के कारण कभी–कभी अपने दुर्भाग्य पर और पति के दुर्व्यसनों पर भारी झुंझलाहट होती तथा खीज भी खूब आती, पर उसके हृदय में धनेश के प्रति असीमित आदरभाव था, हार्दिक प्रेम था, सहानुभूति थी, समपर्ण भी था। क्यों न होता ? भारतीय संस्कृति में पति को परमेश्वर तुल्य मानने के संस्कार जन्म से ही दिए जाते हैं न ! धनेश को सन्मार्ग पर लाने का श्रेय ज्ञानेश के सिवाय यदि किसी को जाता है तो वह एक मात्र उसकी धर्मपत्नी धनश्री को ही है। धनश्री का मानना रहा कि **'पाप से घृणा करो पापियों से नहीं।' पापी तो एक दिन पाप का त्यागकर परमात्मा तक बन जाते हैं।** इस कारण उसने अपने पति धनेश के प्रति बीमारी के समय उसकी दुव्यसनों की आदतों की चर्चा न करके सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार ही रखा और उसकी भरपूर सेवा की।

धनेश की पीड़ा में धनश्री रात–रात भर जागकर पूरा–पूरा साथ देने का प्रयास करती। जब भी धनेश को दौरा पड़ता तो तत्काल धनश्री उसकी पीठ पर हाथ फेरती, उसके आँसू पोंछती। अपनी गोद में उसका सिर रखकर सिर को सहलाती। जरूरत पड़ने पर हाथ–पैर दबाती, नहलाती–धुलाती भी।

सेवा–परिचर्या के साथ–साथ पीड़ा को भुलाये रखने के लिए, पीड़ा से चित्त विभक्त करने के लिए वैराग्यवर्द्धक वैराग्यभावना, बारह भावना के पाठ सुना–सुनाकर संसार के दुःखद और क्षणभंगुर स्वरूप का ज्ञान कराती। कभी कर्मों की विचित्रता की कथा–कहानियाँ सुनाकर समता भाव जागृत करने का प्रयास करती। कभी आध्यात्मिक भजन सुनाकर उसके मन को रमाती। सुनते–सुनते बहुत कुछ पद्य पाठ धनेश को याद भी हो गये, जिन्हें वह स्वयं गुनगुनाया करता।

एक बार धनश्री ने धनेश से पूछा ह्न ''अच्छा बताओ ! बारह भावनाओं का संक्षिप्त सार क्या है ?''

धनेश ने बारह भावनाओं का सार बताते हुए कहा ह्न ''A{ZË` -^mdZm में संयोगों को क्षणभंगुर अनित्य बताया है। पुत्र परिवार कंचन–कामिनी तेरे साथ सदा रहने वाले नहीं हैं। या तो ये तेरा साथ छोड़ देंगे अथवा तू स्वयं इनसे चिर विदाई ले लेगा। अतः हे भव्य ! तू ही इनसे मोह तोड़ दे और अपने अमर आत्मा का अवलम्बन लेकर परमात्मा बन जा।

अशरण भावना में यह कहा है कि ह्न वियोग होना संयोगों का सहज स्वभाव है, ऐसी कोई औषधि या मणि मंत्र–तंत्र नहीं है जो संयोगों का वियोग होने से बचा सके। जगत अशरण है, इसमें शरण खोजना ही पागलपन है। निज आत्मा और पंच परमेष्ठी परमात्मा के सिवाय सब अशरण हैं।

संसार भावना में कहा है कि ह्न संसार के संयोगों में जब सुख है ही नहीं तो इन संयोगों की शरण में जाना ही निरर्थक है।

एकत्व भावना में यह कहा गया है कि दुःखों को मिल–जुलकर नहीं भोगा जा सकता। अकेले ही भोगने होंगे।

अन्यत्व भावना में यह बताया है कि ह्न कोई किसी का साथी नहीं हो सकता। जब शरीर ही साथ नहीं देता तो और तो क्या साथ देंगे ?

अशुचि भावना में कहा गया है कि ह्न जिस देह से तू राग करता है, वह देह अत्यन्त मलिन है, मलमूत्र का घर है।

इसप्रकार प्रारंभ की उपर्युक्त छह भावनायें संसार, शरीर और भोगों से वैराग्य उत्पन्न कराने में निमित्त हैं। इससे यह आत्मा आत्महितकारी धर्म का स्वरूप सुनने–समझने को तैयार हो जाता है तथा इन भावनाओं के भाने से देहादि पर–पदार्थों से ममत्व कम होता है। शेष छह भावनाओं के द्वारा आस्रव, संवर, निर्जरा आदि तत्त्वों का ज्ञान होता है तथा लोक के स्वरूप की जानकारी होती है।

इन बारह भावनाओं का बारम्बार चिन्तन–मनन करना भी व्यवहार धर्म ध्यान है, क्योंकि इनसे ज्ञान, वैराग्य की ही वृद्धि होती है।'' **(क्रमशः)**

(पृष्ठ–1 का शेष ....बीना पंचकल्याणक)

वनगमन एवं दीक्षा विधी सम्पन्न हुई। इस अवसर पर मुनिश्री 108 निर्वाणसागरजी महाराज एवं डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के विशेष प्रवचन का लाभ मिला। रात्रि में विदिशा से पधारे कलाकारों द्वारा सुकुमाल मुनि एवं सीताजी के जीवन पर आधारित नाटक का मंचन हुआ।

30 जनवरी को केवलज्ञान कल्याणक मनाया गया। समवशरण की सुन्दर रचना हुई। रात्रि में नगर विधायक श्रीमती सुशीला राकेश सिरोठिया की अध्यक्षता एवं बड़ामलहरा विधायक श्री कपूरचन्दजी घुवारा के मुख्यातिथ्य में आभार प्रदर्शन का कार्यक्रम आयोजित हुआ। तत्पश्चात् वीतराग–विज्ञान बालिका मण्डल जबेरा की बालिकाओं ने सती अनंतमती नाटक का सुन्दर मंचन किया। जिसकी सभी ने सराहना की।

31 जनवरी को प्रात: मोक्षकल्याणक मनाने के बाद दोपहर में गजरथ द्वारा पाण्डाल की 7 प्रदक्षिणा दी गई। जिन प्रतिमायें जिनमंदिर में विराजमान की गई तथा शिखर एवं वेदी पर भव्य कलशारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में सकल जैनसमाज बीना का अभूतपूर्व सहयोग रहा। सभी ने सीमंधर संगीत–सरिता छिन्दवाड़ा द्वारा प्रस्तुत भक्तिगीतों का लाभ लिया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 23 हजार 316 घण्टों के प्रवचन एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से प्रकाशित 1 लाख 2 हजार 311 रुपये का सत्साहित्य घर–घर पहुँचा।

मालव शिक्षा सम्मान से अलंकृत

इन्दौर (म.प्र.) : शिक्षण कल्याण सदन समिति द्वारा वर्ष 2006 का मालव शिक्षा सम्मान **श्री भानुकुमार जैन** को प्रदान किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में उनकी उत्कृष्ट सेवाओं एवं श्रेष्ठ प्रबंधन कौशल के लिए प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री स्व. ओमप्रकाश रावल की स्मृति में स्थापित लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से उन्हें अलंकृत किया गया।

श्री देवी अहिल्या शिशु विहार में आयोजित एक गरिमामय समारोह में नगर के गणमान्य प्रबुद्धजनों की उपस्थिति में प्रगत प्रौद्योगिकी केन्द्र (बंज) इन्दौर के पूर्व निदेशक पद्मश्री बाबूलालजी पाटोदी ने उन्हें शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति पत्र भेंट किया।

जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से आपको हार्दिक बधाई !

दसलक्षण महापर्व सानन्द सम्पन्न

साकरोदा–उदयपुर (राज.) : यहाँ माघ महीने में आने वाले दशलक्षण महापर्व को दिनांक 23 जनवरी से 2 फरवरी तक सानन्द मनाया गया। प्रतिदिन प्रात: नित्य–नियम पूजन के पश्चात् डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर के मार्मिक प्रवचन हुए।

इस अवसर पर हुए दशलक्षण विधान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगामा एवं पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा ने सम्पन्न कराये तथा रात्रि में आपके प्रवचनों के अलावा पण्डित भोगीलालजी एवं पण्डित खेमराजजी के प्रवचनों का लाभ भी मिला।

विदाई समारोह सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 12 फरवरी, 07 को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा शास्त्री तृतीय वर्ष के छात्रों को भावभीनी विदाई दी गई।

सभा की अध्यक्षता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित श्रीयांसजी सिंघई, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित प्रवीणजी शास्त्री, श्री दिलीपजी शाह, श्री राजधरजी मिश्र आदि महानुभावों ने छात्रों के हितार्थ मार्मिक उद्बोधन दिये।

समारोह में शास्त्री तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों में जितेन्द्र जैन, अमित जैन, अंकुर जैन, रमेश शेरट्ठे, धीरज जैन, प्रशान्त उखलकर, रोहन रोटे, अभय जैन एलमचन्द, नयन जैन, निखिल जैन, अनुप्रेक्षा जैन, किशोर जैन एवं निपुण जैन ने महाविद्यालय में प्रवेश के पूर्व अपनी जीवन शैली को बताते हुए महाविद्यालय में व्यतीत किये पाँच वर्ष के अनुभवों, अनुजों को मार्गदर्शन एवं अपनी आगामी योजनाओं के संबंध में विचार व्यक्त करते हुए महाविद्यालय परिवार एवं गुरुजनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

अन्त में शास्त्री अन्तिम वर्ष के विद्यर्थियों को तिलक लगाकर, मार्ल्यापण, श्रीफल एवं स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने विद्यार्थियों को समाज और संस्था से जुड़े रहकर निरन्तर स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। क्योंकि इसी के माध्यम से उत्कृष्ट तत्त्वप्रचार संभव है।

कार्यक्रम का संचालन शास्त्री द्वितीय वर्ष से सचिन जैन, प्रसन्न सेठे, प्रतीक जैन, संतोष जैन एवं चैतन्य जैन ने किया।

ज्ञातव्य है कि इसकी पूर्व संध्या में दिनांक 11 फरवरी को शास्त्री तृतीयवर्ष द्वारा अयोजित सांस्कृतिक साहित्यिक कार्यक्रमों के पुरस्कार वितरित किये गये।

215 घण्टे के प्रवचन एक सी.डी. में

तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के महत्त्वपूर्ण 215 घंटों के प्रवचनों की एक डी.वी.डी. मात्र 100/- रुपये में प्राप्त करें।

प्राप्ति स्थल ह्न पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 (राज.)।

(पृष्ठ–1 का शेष ....वार्षिकोत्सव ...)

बनाकर व्याख्यान किये गये। इनके अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, बाल ब्रह्मचारी हेमन्तभाई गाँधी सोनगढ़, डॉ. राकेशजी जैन शास्त्री, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन एवं पण्डित संजयजी जैन शास्त्री मंगलायतन द्वारा भी प्रवचनसार ग्रन्थ के विविध विषयों पर व्याख्यान का लाभ प्राप्त हुआ।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में मंगलार्थी छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'अभिप्राय की भूल' नाटिका, विश्वविख्यात नृत्यांगना पद्मश्री शोभना नारायण, आई.ए.एस. द्वारा भगवान आदिनाथ के समक्ष देवी नीलांजना का नृत्य एवं विश्वविख्यात गायिका पलक मुच्छाल द्वारा प्रस्तुत अद्‌भुत जिनेन्द्र भक्ति आर्कषण का केन्द्र रही।

वार्षिक महामहोत्सव के पावन अवसर पर तीर्थधाम मंगलायतन द्वारा प्रकाशित पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के कार्तिकेयानुप्रेक्षा ग्रन्थ पर हुए प्रवचनों का संकलन '**कार्तिकेयानुप्रेक्षा प्रवचन भाग–1**' का विमोचन डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा किया गया। साथ ही डॉ. भारिल्ल के छहढाला पर हुए प्रवचनों की संकलित पुस्तिका '**छहढाला का सार**' तथा जैन सिद्धान्त प्रवेशिका के द्वितीय संस्करण, अकाल की रेखाएँ (कामिक्स) एवं प्रवचन सुधा भाग–8 का विमोचन किया गया।

5 फरवरी 07 को श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन में अध्ययनरत मंगलार्थी छात्रों के पुरस्कार वितरण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के अध्यक्ष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने पुरस्कार प्राप्त मंगलार्थियों को प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार देकर सम्मानित किया ।

तीर्थधाम मंगलायतन के चतुर्थ वार्षिकोत्सव के पावन अवसर पर दिनांक 5 फरवरी 07 को प्रात:काल उत्तरप्रदेश के माननीय **मुख्यमंत्री मुलायमसिंह यादव** ने **धन्य मुनिदशा** प्रकल्प का उद्‌घाटन कर समस्त साधर्मीजनों को इसके दर्शनों का सौभाग्य प्रदान किया।

यह **धन्य मुनिदशा** प्रकल्प मुनि भगवन्तों के वैराग्य एवं आनंदमय जीवन की अद्‌भुत झलक है, जिसमें मुनिराजों के जीवन परिचय के साथ–साथ उन जैसी दशा प्राप्त करने हेतु अद्‌भुत वातावरण का जीवन्त चित्रण है।

जैनसमाज के प्रमुख विशिष्ट प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री का माल्यार्पण कर, साफा पहनाकर, शॉल ओढ़ाकर हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, डॉ. अच्युतानन्द मिश्र, पद्मविभूषण डॉ. गोपालदास 'नीरज' इत्यादि मंचासीन थे।

उद्‌घाटन से पूर्व श्री पवन जैन ने समागत अतिथियों एवं उपस्थित जनता को तीर्थधाम मंगलायतन का परिचय दिया। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का भगवान महावीर के अहिंसा सिद्धान्त पर व्याख्यान हुआ।

इस पञ्च दिवसीय महा मंगलीय कार्यक्रम में प्रतिदिन नवलब्धि मण्डल विधान का भव्य आयोजन श्रीमती इन्दिराबेन जयन्तीलाल दोशी परिवार, मुम्बई द्वारा किया गया। विधि–विधान का सम्पूर्ण कार्य बाल ब्रह्मचारी पण्डित अभिनन्दनकुमार शास्त्री एवं पण्डित संजय जैन शास्त्री मंगलायतन द्वारा मंगलार्थी छात्रों के सहयोग से सम्पन्न कराया गया। **ह्न अशोक लुहाडिया**

सिद्धायतन द्रोणगिरि में मानस्तंभ शिलान्यास

द्रोणगिरि–छतरपुर (म.प्र.) : यहाँ श्री गुरुदत्त कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट द्वारा सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि की तलहटी में निर्माणाधीन सिद्धायतन परिसर में सोमवार, 5 फरवरी से शुक्रवार, 9 फरवरी, 07 तक श्री मानस्तंभ एवं समवशरण जिनालय का शिलान्यास तथा आत्म–निकेतन व गुरुदत्त छात्रावास का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर पंचपरमेष्ठी विधान एवं शिक्षण–शिविर का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रवचनों का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित विरागकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न कराये गये।

श्रीमती चन्द्रप्रभा पूनमचन्द लुहाड़िया और उनके सुपुत्र श्री नरेशकुमार विनयकुमार लुहाड़िया परिवार एवं श्री अनंतभाई अमोलखराय शेठ परिवार मुम्बई द्वारा निर्मित **गुरुदत्त छात्रावास का लोकार्पण** श्री नरेशजी लुहाड़िया दिल्ली ने किया।

डॉ. वासंतीबेन शाह व उनके सुपुत्र डॉ.समीर–गार्गी शाह एवं सुपौत्री जयधारा परिवार मुम्बई द्वारा त्यागी–व्रतियों हेतु निर्मित भवन **आत्म–निकेतन का लोकार्पण** डॉ.वासंतीबेन द्वारा किया गया।

मानस्तंभ का शिलान्यास श्री मुकेशजी जैन देवलाली, श्री सुखदयालजी डेवडिया केसली, जैन बहादुर जैन कानपुर, श्री महेन्द्रकुमार सुनीलकुमार सराफ सागर एवं श्री प्रसन्नकुमार जैन जबलपुर के करकमलों से हुआ। **समवसरण जिनालय का शिलान्यास** डॉ. वासंतीबेन ने किया। **बाहुबली जिनालय की वेदी का शिलान्यास** श्री अनंतभाई शेठ मुम्बई की ओर से पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने किया।

विधान श्री सुगनचन्द–स्नेहलता मानोरिया परिवार अशोकनगर की ओर से कराया गया।

इस अवसर पर सिद्धायतन परिसर में 21 जनवरी से 27 जनवरी, 2008 तक होनेवाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियों हेतु प्रतिष्ठा कमेठी एवं विभिन्न समितियों के गठन की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

पंचकल्याणक के प्रचार–प्रसार हेतु सिद्धायतन रथ को 1 अप्रैल से नई दिल्ली से प्रवर्तन प्रारंभ करने की घोषणा भी की गई।

वैराग्य समाचार

अलवर निवासी **श्री योगेशचन्द जैन** पुत्र श्री बाबूलालजी जैन का दिनांक 10 जनवरी 06 को अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया। आपका श्री रत्नत्रय दि. जैन मंदिर के निर्माण एवं आगामी नेमिनाथ पंचकल्याणक के प्रचार–प्रसार में विशेष योगदान रहा। आप अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, श्री कुन्दकुन्द स्मृति ट्रस्ट एवं दि. जैन मुमुक्षु मण्डल के सक्रिय सदस्य थे।

आपकी स्मृति में फैडरेशन की ओर से जैनपथप्रदर्शक समिति को 251/– की राशि प्राप्त हुई है।

तत्त्वचर्चा

छहढाला का सार 1

- डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा रचित प्रवचनसार परमागम पर साररूप में हुये डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के 25 प्रवचनों को विगत तीन वर्षों से अब तक आप अन्वरत पढ़ रहे थे। जो कि पूर्ण हो चुके हैं। ये सम्पूर्ण विषय वस्तु पाठकों की विशेष मांग पर **प्रवचनसार का सार** नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हो चुकी है, जो हमारे यहाँ मात्र 30/- रुपये मूल्य में उपलब्ध है।

अब प्रस्तुत अंक से कविवर पण्डित दौलतरामजी विरचित जैनदर्शन की सुप्रसिद्ध कृति **छहढाला** ग्रन्थ पर **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा किये गये मार्मिक प्रवचनों को **छहढाला का सार** रूप में पाठकों के लाभार्थ प्रकाशित किया जा रहा है।

पहला प्रवचन

(सोरठा)

तीन भुवन में सार, वीतराग-विज्ञानता।
शिवस्वरूप शिवकार, नमहूँ त्रियोग सम्हारिकै॥

कल्याणस्वरूप और कल्याण करनेवाला वीतराग-विज्ञान तीन लोकों में सारभूत है; अत: मैं उसे मन-वचन-काय को सम्हालकर नमस्कार करता हूँ।

छहढाला के मंगलाचरण का उक्त छन्द पण्डित टोडरमलजी के मोक्षमार्गप्रकाशक के मंगलाचरण का ही प्रतिरूप है।

मोक्षमार्गप्रकाशक के मंगलाचरण में भी वीतराग-विज्ञान को नमस्कार किया गया है तथा उसे मंगलमय और मंगल को करनेवाला बताया गया है। इस मंगलाचरण के छन्द में भी यही बात कही गई है।

मोक्षमार्गप्रकाशक का मंगलाचरण इसप्रकार है –

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग-विज्ञान।
नमो ताहि जाते भये, अरहंतादि महान॥

जिसके आश्रय से अरहंत भगवान अरहंत बने, वह वीतराग-विज्ञान मंगलमय और मंगल करनेवाला है। मैं उस वीतराग-विज्ञान को नमस्कार करता हूँ।

यह तो आप जानते ही हैं कि दोहा के पदों का स्थान परिवर्तन कर देने से सोरठा बन जाता है। मोक्षमार्गप्रकाशक के दोहारूप मंगलाचरण को सोरठा छन्द में इसप्रकार बदला जा सकता है –

(सोरठा)

वीतराग-विज्ञान, मंगलमय मंगलकरण।
अरहंतादि महान, नमो ताहि जाते भये॥

इसीप्रकार छहढाला के मंगलाचरण के सोरठा को भी दोहा में बदला जा सकता है।

यह **छहढाला** नामक ग्रन्थ सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज में न केवल सर्वमान्य है, अपितु अत्यन्त लोकप्रिय भी है। ऐसे लोग तो इस जगत में मिल जायेंगे, जो समयसार का नाम सुनकर नाक-भौं सिकोड़ें; लेकिन ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं मिलेगा कि जिसे छहढाला स्वीकृत न हो। इसलिए मैं कहता हूँ कि दिगम्बर जैन समाज की एकता का यदि कोई सबसे बड़ा आधार बन सकता है तो यह छहढाला ग्रन्थ बन सकता है।

शायद आपको यह पता नहीं है कि जिन दौलतरामजी ने यह छहढाला लिखी है, वे दिल्ली निवासी थे। आपने पढ़ा होगा कि उनका जन्म हाथरस के पास सासनी (उ. प्र.) में हुआ था।

मेरा जन्म भी उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले के एक छोटे से गाँव बरौदास्वामी में हुआ था; पर अब मैं ४० वर्ष से जयपुर में रह रहा हूँ। ऐसी स्थिति में मैं आपसे ही पूछना चाहता हूँ कि मैं कहाँ का हूँ ? अब आप मुझे कहाँ का मानते हैं – जयपुर का या बरौदास्वामी का ? अब तो आप मुझे जयपुर का ही मानते हैं न ?

इसीप्रकार पण्डित दौलतरामजी ने अपने जीवन के अन्तिम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वर्ष दिल्ली में ही बिताये थे; इसलिए हम उन्हें दिल्ली का कहे या सासनी का ? जन्म सासनी में हुआ होगा, उनके पिताजी वगैरे हाथरस में व्यापार करते थे। वे भी उनके साथ कुछ दिन हाथरस में व्यापार करते रहे। फिर कुछ दिन वे मथुरा भी रहे। कई जगह घूमे, लेकिन उनका समाधिमरण दिल्ली में ही हुआ था।

न केवल समाधिमरण हुआ, पर अन्तिम समय में अनेक वर्षों तक वे दिल्ली में ही रहे और उन्होंने सम्मेदशिखर की यात्राएँ भी दिल्ली के समाज के साथ की। इसलिए अब यह ठीक ही है कि वे दिल्लीवासी ही थे।

इस छहढाला की विषयवस्तु और प्रतिपादन क्रम महापण्डित टोडरमलजी के मोक्षमार्गप्रकाशक से और प्रतिपादन शैली महाकवि बुधजनजी से प्रभावित है। उन्होंने स्वयं लिखा है कि **लख बुधजन की भाख**। बुधजन कवि ने भी इसके पहले एक छहढाला लिखी थी। उसे देखकर इन्हें छहढाला लिखने का उत्साह जागृत हुआ।

यद्यपि बुधजनजी के पहले द्यानतरायजी ने भी एक छहढाला लिखी थी, लेकिन वह इतनी लोकप्रिय नहीं हो पाई; जितनी बुधजनजी की हुई। दौलतरामजी की छहढाला तो हर आदमी के कंठ का हार बन गई है।

यह छहढाला छह प्रकार के छन्दों में है, इसे छह रागों में गाया जाता है, इन्हीं रागों को ढाल कहा जाता है। इसप्रकार इस कृति का

नाम छहढाला रखा गया। पहली ढाल चौपाइयों में, दूसरी ढाल पद्धरी छन्द में, तीसरी ढाल नरेन्द्र छन्द (जोगीरासा) में, चौथी ढाल रोला छन्द में, पाँचवीं ढाल चाल छन्द में और छठवीं ढाल हरिगीतिका छन्द में है।

दूसरी बात यह है कि एक तलवार होती है और एक ढाल। तलवार मारने के काम आती है और ढाल अपनी रक्षा के काम आती है।

हम जैनी अहिंसक है, इसलिए हम मारने की बात तो कभी सोच भी नहीं सकते; परन्तु अपनी सुरक्षा की चिंता तो हरेक को होती ही है। इसलिए हमें ढाल की जरूरत है, तलवार की नहीं। हमें खतरा भी इस जगत के जीवों से नहीं; अपने ही राग, द्वेष, मोह – इन विकारी भावों से है। इन भावों से बचाने के लिए यह छहढाला ढाल का काम करता है, इसलिए इसका नाम है छहढाला।

हमने ढालें तो छह-छह रखीं, पर तलवार एक भी नहीं रखी; क्योंकि हमें मारने का काम करना ही नहीं है।

एक प्रश्न है कि 'प' का 'ष' बनाना हो, षटकोणवाला 'ष' बनाना हो अथवा 'व' का 'ब' बनाना हो तो क्या करें ?

इस प्रश्न के उत्तर में क्षत्रिय कहेगा कि पेट चीर दो; लेकिन जैनी कहेगा पेट भर दो। क्रिया एक ही है, लेकिन उसे जैनी भरना बोलता है, चीरना नहीं बोलता। चीरने की भाषा, मार-काट करने की भाषा जैनियों की भाषा नहीं है।

मोक्षमार्गप्रकाशक के समान इसमें भी सबसे पहले पहली ढाल में संसार के दुःखों का वर्णन है। मोक्षमार्गप्रकाशक के दूसरे अधिकार में संसार के दुःखों के कारण बताये हैं। इसकी भी दूसरी ढाल में दुःखी होने का कारण क्या है – यह बताया है।

छहढाला को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजी स्वामी तो छोटा समयसार कहा करते थे। यह छोटा समयसार सबकी समझ में आता है और सभी को सहज भाव से स्वीकृत है।

बहुत दिनों पहले की बात है, मैं एक जगह गया था, वहाँ एक संस्था चलायी जाती थी, जिसमें लड़कियाँ पढती थीं।

वहाँ की अध्यापिकाओं ने मुझसे कहा – इन लड़कियों से आप कुछ पूछो, इनकी कुछ परीक्षा लो।

मैंने कहा – इसकी क्या जरूरत है ? आप इन लोगों को पढ़ाती हो तो इन्हें सब कुछ आता ही होगा।

जब उन्होंने अति आग्रह किया तो मैंने एक प्रश्न किया –

"छहढाला में किसकी कहानी है ?"

मेरा यह प्रश्न सुनकर वे लड़कियाँ एक-दूसरे का मुँह देखने लगीं, अपनी अध्यापिकाओं का मुख देखने लगीं। सब तरफ चुप्पी छा गई। किसी ने कोई जवाब नहीं दिया।

एक हिम्मतवाली लड़की ने हाथ ऊपर उठाकर कहा –

"साहब ! आपसे भी मेरा एक प्रश्न है।"

मैंने कहा – "बोलो, आपका क्या प्रश्न है ?"

उसने कहा – "आपने छहढाला पढ़ा है क्या ?"

मैंने सोचा गजब हो गया। हम परीक्षा लेने चले थे, यहाँ तो परीक्षा देने की नौबत आ गई। मैंने कहा –

"बहन ! तुम ऐसा क्यों पूछ रही हो?"

तो उसने कहा – "छहढाला में कोई कहानी थोड़े ही है, वह तो अध्यात्म का ग्रन्थ है। वह प्रथमानुयोग थोड़े ही है कि जिसमें राम की, कृष्ण की, महावीर की कहानी हो। मुझे तो ऐसा लगता है कि आपने छहढाला पढ़ा ही नहीं और हमसे पूछते हैं कि इसमें किसकी कहानी है?"

मैंने कहा – "तुम ठीक कहती हो, मैंने शुरू के दो-तीन छन्द पढ़े थे, इसलिए ऐसा भ्रम हो गया है। उनमें लिखा था कि –

तास भ्रमण की है बहु कथा, पै कछु कहूँ कही मुनि यथा।

संसारी जीव के संसारभ्रमण की कहानी बहुत विस्तारवाली है; किन्तु मैं तो जिसप्रकार पहले मुनिराजों ने कही है, उसके अनुसार थोड़ी-बहुत कहूँगा।

इसमें कविवर प्रतिज्ञा कर रहे हैं कि मैं उस कहानी को थोडी-बहुत कहता हूँ। कहानी तो बहुत लम्बी है, पूरी कहना तो संभव नहीं है; फिर भी थोडी-बहुत कहता हूँ। हमारे आचार्य भगवन्तों ने जैसी कही है, वैसी मैं कहता हूँ।"

मैंने सोचा – यदि उन्होंने ऐसी प्रतिज्ञा की है तो कहानी भी कही होगी।

अरे भाई ! छहढाला में सभी जीवों की कहानी है; हमारी-तुम्हारी – सबकी, बहनों की, भाईयों की; इस जगत् में जितने जीव हैं, उन सभी की कहानी है इस छहढाला में।

यह कहानी कहाँ से शुरू होती है और कहाँ समाप्त होती है?

इस प्रश्न के उत्तर में कहते हैं कि –

काल अनन्त निगोद मँझार, बीत्यो एकेन्द्रिय तन धार।

यह कहानी निगोद से आरंभ होती है और मोक्ष में जाकर समाप्त होती है; जहाँ वे –

रहीहैं अनन्तानन्त काल, यथा तथा शिव परिणये।

जो जीव मोक्ष में चले गये हैं, अनन्त सुखी हो गये हैं; वहाँ वे अनन्त काल तक रहेंगे। जबतक मोक्ष में नहीं गये तो समझ लेना कि हमारी कहानी अभी समाप्त नहीं हुई, बीच में ही चल रही है। सिद्धों की कहानी भी समाप्त कहाँ हुई ? अभी भी चल ही तो रही है। वे सिद्ध अनन्त काल इसीप्रकार अनन्त सुखी रहेंगे। **(क्रमशः)**

17 फरवरी 2007, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

पीएच.डी. हेतु हार्दिक बधाई !

1. **वाराणसी (उ.प्र.) :** श्री टोडमल दि. जैन सिद्धा. महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक **श्री नेमिनाथ बालीकाई शास्त्री** (एम.ए., बी.एड.) को उनके 395 पृष्ठ के संस्कृत भाषामय शोध-प्रबन्ध '**आचार्य कुन्दकुन्दविरचितप्रवचनसारस्य विवेचनात्मक-मध्ययनम्**' के लिए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्या., वाराणसी द्वारा पीएच.डी की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इस दीक्षान्त समारोह में उत्तरप्रदेश के राज्यपाल टी.वी. राजेश्वरी एवं लालबहादुर संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीकुटुम्ब शास्त्री, पद्मविभूषण गिरिजाव्यास की उपस्थिति में आपको उपाधि प्रदान की गई।

आपका यह शोध-प्रबन्ध प्रो. डॉ. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। इस शोधकार्य में आपको ब्र. यशपालजी जयपुर, श्री आदिकुमार बेडगे, सुश्री सुजाता रोटे एवं श्री जीवंधर जडे का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ तथा प्रेरणा स्व. ब्र. माणिकचंदजी भिसीकर गुरुजी से प्राप्त हुई।

ज्ञातव्य है कि आप वर्तमान में कुम्भोज बाहुबली (महा.) में 'सन्मति' मासिक पत्रिका में सम्पादन कार्य करते हैं।

2. **मैसूर (कर्नाटक) :** सांगली निवासी **सुश्री स्वयंप्रभा पाटील** को मैसूर विश्व विद्यालय द्वारा उनके शोध प्रबन्ध '**जैन श्रमण में प्रतिक्रमण का स्वरूप**' विषय पर दि. 9 जनवरी, 07 को पीएच.डी. की उपाधि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आपको प्रो. ए. एन. उपाध्ये गोल्ड मैडल प्राप्त हुआ।

आपका यह शोध प्रबन्ध डॉ. एन. सुरेशकुमार के निर्देशन एवं स्वस्तिश्री चारुकीर्तिजी भट्टारक की प्रेरणा से पूर्ण हुआ। इस कार्य में डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

आप दोनों को इस उपलब्धि हेतु हार्दिक बधाई !

डॉ. अनेकान्त ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित

इन्दौर (म.प्र.) : कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ परिसर इन्दौर में दिनांक 14 जनवरी, 07 को आयोजित पुरस्कार समर्पण समारोह में वर्ष 2004 का **कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ पुरस्कार** डॉ. अनेकान्तकुमार जैन, नई दिल्ली को उनके शोध प्रबन्ध 'दार्शनिक समन्वय की दृष्टि : नयवाद' पर प्रदान किया गया। डॉ. अनेकान्त नई दिल्ली स्थित श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानितविश्वविद्यालय) में जैनदर्शन विभाग में वरिष्ठ व्याख्याता हैं। इसके पूर्व आपको शोध निबन्ध पर वर्ष 1999 का अर्हद्वचन पुरस्कार भी कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ शोध संस्थान द्वारा प्रदान किया जा चुका है।

आपको जैनपथप्रदर्शक समिति की ओर से हार्दिक बधाई।

प्रवचनसार भाषाकवित्त का विमोचन उपराष्ट्रपतिजी द्वारा

विमोचन करते हुये महामहिम उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंहजी शेखावत
साथ में हैं बायें-श्री मिलापचन्द डंडिया, दायें-डॉ. श्रीयांस सिंघई एवं श्री हरीश ठोलिया

जयपुर (राज.) : दिनांक 24 जनवरी को भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम भैरोसिंहजी शेखावत द्वारा उनके ही निवास स्थान पर आयोजित भव्य समारोह में प्रवचनसार भाषा कवित्त का विमोचन किया गया।

ग्रन्थाधिराज प्रवचनसार की 250 वर्ष पूर्व बुन्देलखण्ड क्षेत्र में हुये कविवर देवीदास द्वारा विरचित पद्य टीका प्रवचनसार भाषा कवित्त का श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्रथम बैच के स्नातक **डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई** ने हिन्दी भाषा में अनुवाद एवं सम्पादन किया है।

कृति का प्रकाशन **श्री हरीशचन्दजी ठोलिया** परिवार द्वारा उनकी धर्मपत्नी की स्मृति में किया गया।

इस अवसर पर महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोसिंहजी शेखावत ने पाण्डुलिपियों के प्रकाशन के कार्य को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताते हुये कहा कि पाण्डुलिपियाँ भारतीय संस्कृति की धरोहर है, इनमें ज्ञान-विज्ञान की विरासत छिपी हुई है। उस विरासत को उजागर करने के लिये श्री हरीशजी ठोलिया ने अपनी धर्मपत्नी की स्मृति में इस ग्रंथ का प्रकाशन करके प्रबुद्ध पाठकों के लिये एक महत्त्वपूर्ण कार्य तो किया ही है साथ ही जनसामान्य को भी यह प्रेरणा दी है कि वे भी अपने प्रियजनों की स्मृति को अक्षुण्ण गरिमा प्रदान करने के लिये पाण्डुलिपियों को प्रकाश में लाने का कार्य करें।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,**डबल एम.ए.जैनविद्या व धर्मदर्शन; इतिहास, नेट एवं **पण्डित जितेन्द्र वि.राठी,** साहित्याचार्य
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
फैक्स : (0141) 2704127